This question paper contains 2 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **3553**

Unique Paper Code : **12051101**

Name of the Paper : **हिंदी भाषा और उसकी लिपि का इतिहास**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (CBCS)**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

1. भारतीय आर्य भाषाओं का परिचय दीजिये। 14

अथवा

आधुनिक काल में हिंदी की स्थिति को स्पष्ट कीजिये।

2. राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के विकास को स्पष्ट कीजिये। 14

अथवा

हिंदी की प्रमुख बोलियों का परिचय दीजिये।

3. लिपि की परिभाषा देते हुए, भाषा और लिपि का अंतर स्पष्ट कीजिये। 14

अथवा

लिपि का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डालिये।

4. देवनागरी लिपि पर अन्य लिपियों के प्रभाव को रेखांकित कीजिये। 14

अथवा

देवनागरी लिपि और कंप्यूटर के अंत:संबंध पर विचार कीजिये।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : 6+6+7

(क) पश्चिमी हिंदी की बोलियाँ

(ख) हिंदी का आरंभिक रूप

(ग) संचार भाषा

(घ) आदर्श लिपि

(ङ) हिंदी भाषा का क्षेत्र।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 2444 **JC**

Unique Paper Code : 12051101 – OC

Name of the Paper : हिंदी भाषा और उसकी लिपि का इतिहास

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS (OC)**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. आधुनिक आर्य भाषाएँ कौन-कौन सी हैं ? उनका संक्षिप्त परिचय दीजिए । (14)

अथवा

आदिकाल और मध्यकाल में हिंदी के क्रमिक विकास को स्पष्ट कीजिए ।

2. राजभाषा के रूप में हिंदी की सांवैधानिक स्थिति पर प्रकाश डालिए । (14)

P.T.O.

अथवा

अखिल भारतीय संदर्भों में हिंदी की स्थिति का आकलन कीजिए ।

3. लिपि किसे कहते हैं ? भाषा और लिपि के अंतर्संबंधों की विवेचना कीजिए । (14)

अथवा

चित्रलिपि और भावलिपि का विस्तृत परिचय दीजिए ।

4. आदर्श लिपि का अर्थ स्पष्ट करते हुए देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । (14)

अथवा

देवनागरी लिपि का परिचय देते हुए उसके मानकीकरण पर प्रकाश डालिए ।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी ;

(ii) पूर्वी हिंदी की बोलियाँ ;

(iii) लिपि की आवश्यकता ;

(iv) संचार भाषा ;

(v) देवनागरी लिपि और कम्प्यूटर । (6,6,7)

(600)

This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **3554**

Unique Paper Code : **12051102**

Name of the Paper : **हिंदी कविता (आदिकालीन एवं भक्तिकालीन काव्य)**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (CBCS)**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अमीर खुसरो का काव्य लौकिक एवं अलौकिक दोनों पक्षों को अभिव्यक्त करता है। स्पष्ट कीजिये।

अथवा

विद्यापति के काव्य-सौंदर्य की समीक्षा कीजिये। 12

2. कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये।

अथवा

'मधुमालती' की काव्य भाषा पर विचार कीजिये। 12

3. सूरदास की विरह भावना पर प्रकाश डालिये।

अथवा

मीरा काव्य में स्त्री वेदना की विवेचना कीजिये। 12

P.T.O.

4. तुलसी काव्य में राम के स्वरूप का वर्णन कीजिये।

अथवा

रामचरितमानस के आधार पर तुलसी की समन्वयवादी दृष्टि पर विचार कीजिये। 12

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिये : 8+7

(क) छाप-तिलक तज दीन्ही रे, तोसे नैना मिला के।
प्रेम बटी का मदवा पिलाके
मतवारी कर दीन्ही रे, मोसे नैना मिला के।
'खुसरो' निजाम पै बलि-बलि जइए,
मोहे सुहागन कीन्ही रे, मोसे नैना मिला के।

अथवा

कबीर औगुँण ना गहैं, गुँण ही कौ लें बीनि।
घट घट महु के मधुप ज्यूँ, पर आत्म ले चीन्हि।।
बसुधा बन बहुँ भाँति है, फूल्यो फल्यौ अगाध।
मिष्ट सुबास कबीर गहि, विषम कहै किहि साथ।।

(ख) पग बाँध घूँघरयाँ णाच्यारी।।
लोग कह्या मीराँ बावरी, सासु कह्याँ कुलनासाँ री
बिख रो प्यालो राणा भेज्याँ, पीवाँ मीराँ हाँसाँ री।

तण मण बार्‌याँ परि चरिणामाँ दरसण अमरित प्यास्याँ री।
मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, थ्यारी धारी सरणाँ आस्याँ री।।

अथवा

सुनि सुंदर बैन सुधारस-साने सयानी हैं जानकीं जानी भली।
तिरछे करि नैन, दै सैन, तिन्हैं समुझाइ कछू, मुसुकाइ चली।
तुलसी तेहि औसर सबै अवलोकति लोचनलाहु अली।
अनुराग-तड़ाग में भानु उदैं बिगसीं मनो मंजुल कंजकलीं।।

6. निम्नलिखित पद्यांशों में दिए गए निर्देश के अनुसार किन्हीं दो का रचना-कौशल विश्लेषित कीजिये : 2×6=12

(क) जहाँ-जहाँ पद-जुग धरई। तहिं-तहिं सरोरूह झरई
जहाँ-जहाँ झलकए अंग। तहिं-तहिं बिजुरि-तरंग।।
कि हेरलि अपरुब गोरि। पइठलि हिअ–मधि मोरि
जहाँ-जहाँ नयन-विकास। ततहिं कमल-प्रकास।।

(भाषा सौंदर्य)

अथवा

महाई म्हाँ गोविन्द गुण गाणा।।

राजा रूठ्याँ नगरी त्यागाँ, हरि रूठ्याँ कठ जाणा।

राणो भेज्या विख रो प्यालो, चरणामृत पी जाणा।

काला नाग पिटारयाँ भेज्या, सालगराम पिछाणा।

मीरा गिरधर प्रेम दिवाँणी, साँवल्या वर पाणा।

(स्त्री वेदना)

(ख) ऊधो मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।

हंस सुता की सुंदर कगरी, अरु कुंजनि की छांही।।

वै सुरभी वै बच्छ दोहनी, खरिक दुहावन जाहीं।

ग्वाल-बाल मिलि करत कुलाहल, नाचत गहि गहि बाहीं।।

(प्रकृति चित्रण)

अथवा

सिथिल स्नेह कहैं कौसिला सुमित्राजू सों,

मैं न लखी सौति, सखी! भंगिनी ज्यों सेई है

कहै मोहि भैया, कहौं–मैं न मैया, भरत की

बलैया लेहौं भैया, तेरी मैया कैकेई है।।

(पारिवारिक प्रेम)

4,000

[This question paper contains 6 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 2445 **JC**

Unique Paper Code : 12051102 – OC

Name of the Paper : हिंदी कविता (आदिकालीन एवं भक्तिकालीन काव्य)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS (OC)**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अमीर खुसरो की काव्य-कला की विवेचना कीजिए।

अथवा

विद्यापति की शृंगार-भावना पर प्रकाश डालिए। (12)

P.T.O.

2. कबीर भक्त हैं या समाज सुधारक – स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'मधुमालती' के आधार पर मंझन के नख-शिख वर्णन की विशेषताएँ लिखिए। (12)

3. सूरदास के काव्य में वर्णित वात्सल्य पक्ष का विवेचन कीजिए।

अथवा

मीराबाई के पदों की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए। (12)

4. तुलसीदास के काव्य में भक्ति-भावना के स्वरूप का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

तुलसीदास की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) अब का डरौं डर डरहि समान,

जब थैं मोर तोर पहिचांन ।। टेक ।।

जब लग मोर तोर करि लीन्हा, भै भै जनमि जनमि दुख दीन्हा।

आगम निगम एक करि जांनां, ते मनवां मन माहि समांनां।

जब लग ऊँच नीच करि जांनां, ते पसुवा भूले भ्रम नांनां।

कहि कबीर मैं मेरी खोई, तबहि रांम अवर नहीं कोई।

अथवा

ऊधौ मन माने की बात।

दाख छुहारा छाँड़ि अमृत-फल, विषकीरा विष खात।

ज्यौँ चकोर कोँ देइ कपूर कोउ, तजि अंगार अघात।

मधुप करत घर कोरि काठ मै, बँधत कमल के पात।

ज्यौँ पतंग हित जानि आपनौ, दीपक सौं लपटात।

सूरदास जाकौ मन जासौँ, सोई ताहि सुहात। (8)

(ख) नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।

लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट ।।

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदयँ लाई सोई लीन्ही।

नाथ जुगल लोचन भरि बारी। बचन कहे कछु जनककुमारी।

अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना। दीन बंधु प्रनतारित हरना।

मन क्रम बचन चरन अनुरागी। केहिं अपराध नाथ हौं त्यागी।

अवगुन एक मोर मैं माना । बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना ।
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा । निसरत प्रान करहिं हठि बाधा ।।

अथवा

अवधेसके द्वारें सकारें गई सुत गोद कै भूपति लै निकसे ।
अवलोकि हौं सोच बिमोचन को ठगि-सी रही, जे न ठगे धिक-से ।।
तुलसी मन-रंजन रंजित-अंजन नैन सुखंजन-जातक-से ।
सजनी ससिमें समसील उभै नवनील सरोरुह-से बिकसे ।।

(7)

6. निम्नलिखित पद्यांशों में दिए गए निर्देश के अनुसार किन्हीं दो का रचना कौशल विश्लेषित कीजिए : (6×2=12)

(क) छापा तिलक तज दीन्ही रे, तो से नैना मिला के ।
प्रेम बटी का मदवा पिलाके
मतवारी कर दीन्ही रे, मो से नैना मिला के ।
'खुसरो' निज़ाम पै बलि-बलि जइए,
मोहे सुहागन कीन्ही रे, मो से नैना मिला के ।

(भाषा-शिल्प)

अथवा

ए सखि पेखलि एक अपरूप ।
सुनइत मानबि सपन-सरूप ।।
कमल जुगल पर चाँदक माला ।
तापर उपजत तरुन तमाला ।।
तापर बेढलि बीजुरी-लता ।
कालिंदी तट धीरे चलि जाता ।।
सारवा-सिखर सुधाकर पाँति ।
ताहिं नब पल्लव अरुनक भाँति ।। (भाव सौंदर्य)

(ख) कबीर पाँहन केश पूतला, करि पूजै करतार ।
इँह र भरोसै जे रहे, ते बूड़े काली धार ।।
कबीर मन मथुरा दिल द्वारिका, काया कासी जांणि ।
दसवां द्वारा देहुरा, तामैं जोति पिछांणि ।।

(भक्ति-तत्त्व)

अथवा

आली रे म्हारे णेणाँ बाण पड़ी ।। टेक ।।
चित चढ़ी म्हारे माधुरी मूरत, हिवड़ा अणी गड़ी ।

कब री ठाड़ो पंथ निहाराँ, अपने भवण खड़ी ।

अटक्याँ प्राण सांवरो प्यारो, जीवण मूर जड़ी ।

मीराँ गिरधर हाथ बिकाणी, लोग कह्याँ बिगड़ी ।।

(प्रेम भावना)

This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **3516**

Unique Paper Code : **12135902**

Name of the Paper : **Indian Culture and Social Issues**

Name of the Course : **B.A. (H)**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

टिप्पणी :–अन्यथा आवश्यक न होने पर, इस प्रश्न-पत्र का उत्तर संस्कृत या हिंदी **या** अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिये, परन्तु सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।

Note :— Unless otherwise required in a question, answers should be written *either* in Sanskrit *or* in Hindi *or* in English, but the same medium should be used throughout the paper.

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Answer *All* questions.

P.T.O.

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 15×4=60

Answer any *four* of the following :

(*i*) संस्कृति का स्वरूप स्पष्ट करते हुए भारतीय संस्कृति पर प्रकाश डालिए।

Throw light on Indian culture by explaining the nature of culture.

(*ii*) वैदिक सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं की विवेचना कीजिए।

Discuss the major characteristics of Vedic Civilization.

(*iii*) भारतीय पंचांग के अनुसार भारतीय कृषि सम्बन्धित तथा मौसमी त्योहारों पर टिप्पणी लिखिए।

Write a note on Indian agricultural and seasonal festivals according to the Indian calendar.

(*iv*) संस्कृत साहित्य में प्रतिपादित राम के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

Throw light on the Rāma's character as propound in Sanskrit literature.

(*v*) द्रौपदी के प्रश्नों पर धृतराष्ट्र की सभा की प्रतिक्रिया का वर्णन कीजिए।

Discuss the reaction of Dhṛtarāṣtra's sabha on the questions of Draupadī.

(*vi*) मनुस्मृति के अनुसार धर्म के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

Define the nature of 'Dharma' according to Manusmṛti.

(*vii*) याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार सम्पत्ति में नारी के अधिकारों की विवेचना कीजिए।

Discuss the women's right to property according to Yājñavalkyasmṛti.

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 2×7.5=15

(*i*) वज्रसूचि के अनुसार वर्ण-व्यवस्था

(*ii*) भारतीय-इस्लामिक परम्परा

(*iii*) यक्षगान

(*iv*) गीतगोविन्द एवं ओडिसी नृत्य

(*v*) मकर संक्रांति

Write short notes on any *two* of the following :

(*i*) Varṇa System according to Vajrasūci

(*ii*) Indo-Islamic Tradition

(*iii*) Yakṣgāna

(*iv*) Gītagovinda and Odissi dance

(*v*) Makar saṇkranti

[This question paper contains 6 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 2503 **JC**

Unique Paper Code : 12051303

Name of the Paper : Hindi Kahani

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. कहानी के तत्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी की समीक्षा कीजिए । (12)

अथवा

'पूस की रात' कहानी के 'हल्कू' के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

P.T.O.

2. 'तीसरी कसम' कहानी की मूल संवेदना का विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

'वापसी' कहानी के माध्यम से समाज की किस समस्या को उठाया गया है - सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

3. 'पाजेब' कहानी के बालक 'आशुतोष' की चरित्रगत विशेषताएँ लिखिए। (12)

अथवा

"'परिन्दे' कहानी शिल्प की दृष्टि से बेजोड़ रचना है" - विश्लेषण कीजिए।

4. 'सिक्का बदल गया' कहानी की मूल संवेदना का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

'जंगल जातकम' कहानी की प्रतीकात्मकता स्पष्ट कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) बोधा गाड़ी पर लेट गया भला। आप भी चढ़ जाओ। सुनिए

तो, सूबेदारनी होरां को चिट्ठी लिखो तो मेरा मत्था टेकना लिख देना। और जब घर जाओ तो कह देना कि 'मुझसे जो उसने कहा था - वह मैंने कर दिया'। गाड़ियाँ चल पड़ी थीं। सूबेदार ने चढ़ते-चढ़ते लहना का हाथ पकड़कर कहा - 'तेने मेरे और बोधा के प्राण बचाए हैं। लिखना कैसा ? साथ ही घर चलेंगे। अपनी सूबेदारनी को तू ही कह देना। उसने क्या कहा था ? 'अब आप गाड़ी पर चढ़ जाओ। मैंने जो कुछ कहा वह लिख देना और कह भी देना।'

अथवा

दस बज चुके थे। मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपडे पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मोटर रोक कर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी। भालू मनाने चला था। ब्याह की तैयारी थी; यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं कांप जाता था। मानो उसके रोएँ रो रहे थे। मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसा बटोरकर उसने भीड़ में मुझे देखा। वह जैसे क्षणभर के लिए स्फूर्तिमान हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा - 'आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?'

(ख) दुल्हिनया पान खाती है, दूल्हा की पगड़ी में मुँह पोंछती है । ओ दुलहिनिया, तेगछिया गांव के बच्चों को याद रखना । लौटती बेर गुड़ का लड्डू लेती आइयो । लाख बरिस तेरा दूल्हा जिये ! कितने दिनों का हौंसला पूरा हुआ है हिरामन का, ऐसे कितने सपने देखे हैं उसने ! वह अपनी दुलहिन को लेकर लौट रहा है । हर गांव के बच्चे तालियाँ बजाकर गा रहे हैं । हर आँगन से झाँककर देख रही हैं औरतें । मर्द लोग पूछते हैं, 'कहाँ की गाड़ी है, कहाँ जाएगी ?' उसकी दुलहिन डोली का परदा थोड़ा सरकाकर देखती है । और भी कितने सपने......

अथवा

मिस्टर शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, फिर अधखुली आँखों से माँ की ओर देखने लगे, और माँ के कपड़ों की सोचने लगे । शामनाथ हर बात में तरतीब चाहते थे । घर का सब संचालन उनके अपने हाथ में था । खूँटियाँ कमरों में कहाँ लगाई जाएँ, बिस्तर कहाँ पर बिछे, किस रंग के पर्दे लगाएँ जाएँ, श्रीमती कौन-सी साड़ी पहने, मेज किस साइज की हो.... शामनाथ को चिंता थी कि अगर चीफ का साक्षात माँ से हो गया, तो कहीं लज्जित नहीं होना पड़े । माँ को सिर से पाँव तक देखते हुए

बोले– "तुम सफेद कमीज और सफेद सलवार पहन लो, माँ । पहन के आओ तो, जरा देखूँ ।"

(ग) सिद्धेश्वरी की समझ में नहीं आ रहा था की क्या कहे । वह चाहती थी की सभी चीजें ठीक से पूछ ले । सभी चीजें ठीक से जान ले और दुनिया की हर चीज पर पहले की तरह धड़ल्ले से बात करे । पर उसकी हिम्मत नहीं होती थी । उसके दिल में ना जाने कैसा भय समाया हुआ था । अब मुंशीजी इस तरह चुपचाप दुबके हुए खा रहे थे, जैसे पिछले दो दिनों से मौन व्रत धारण कर रखा हो और उसको कहीं जाकर आज शाम को तोड़ने वाले हों ।

अथवा

रमेश चौधरी के शब्दों में छिपी आंच को उसने महसूस कर लिया था । वह अभी तक सोनकर की मौत से उबर नहीं पाया था कि रमेश चौधरी के इस फैसले ने उसे पेशोपेश में डाल दिया था । सोनकर का चेहरा बार-बार उसकी आँखों में उत्तर रहा था । राकेश अपने भीतर उठने वाली बेचैनी को जितना दबाने की कोशिश कर रहा था, वह उतनी ही तीव्रता से बढ़ रही थी ।

वह फिर से कुर्सी पर बैठ गया था। सोनकर का चेहरा उसे उद्वेलित कर रहा था। सोनकर की जददोजहद राकेश की अपनी पीड़ा बन गई थी। उसने एक गहरी सांस ली और झटके से उठकर खड़ा हो गया था।

[This question paper contains 6 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 2502 **JC**

Unique Paper Code : 12051302

Name of the Paper : हिन्दी कविता (आधुनिक काल-छायावाद तक)

Name of the Course : **B.A. (H) हिन्दी CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) प्रियतम् तुम श्रुति-पथ से आये । (8)

तुम्हें हृदय में रख कर मैंने अधर-कपाट् लगाये ।

मेरे हास-विलास! किन्तु क्या भाग्य तुम्हें रख पाये ?

दृष्टि मार्ग से निकल गये ये तुम रसमय मनभाये!

प्रियतम तुम श्रुति-पथ से आये ।

अथवा

स्नेह-निर्झर बह गया है।

रेत ज्यों तन रह गया है।

आम की यह डाल जो सूखी दिखी,

कह रही है- "अब यहाँ पिक या शिखी

नहीं आते, पंक्ति मैं वह हूँ लिखी

नहीं जिसका अर्थ

जीवन दह गया है।"

(ख) 'हित-वचन नहीं तूने माना, मैत्री का मूल्य न पहचाना, (7)

तो ले, मैं भी अब जाता हूँ, अन्तिम संकल्प सुनाता हूँ।

याचना नहीं, अब रण होगा,

जीवन-जय या कि मरण होगा।

अथवा

यहीं कहीं पर बिखर गयी वह

भग्न विजय-माला-सी।

उसके फूल यहाँ संचित हैं

यह स्मृति-शाला सी ।।

सहे वार पर वार अन्त तक

लड़ी वीर बाला-सी

आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर

चमक उठी ज्वाला-सी ।।

2. 'यशोधरा' को केन्द्र में रखते हुए मैथिलीशरण गुप्त की नारी-विषयक दृष्टि पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

'यशोधरा' की भाषागत् विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

3. 'लहर' में व्यक्त जयशंकर प्रसाद के काव्य-सौन्दर्य का विवेचन कीजिए।

(12)

अथवा

'अरी वरुणा की शांत कछार' का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. पाठ्यक्रम में निर्धारित कविताओं के आधार पर निराला की काव्य-प्रवृत्तियों पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

'तोड़ती पत्थर' कविता की मूल-संवेदना पर प्रकाश डालिए।

5. 'रश्मिरथी' के आधार पर कृष्ण-कर्ण संवाद का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं का वैशिष्ट्य स्पष्ट कीजिए।

6. दिए गए निर्देशों के आधार पर किन्हीं **दो** काव्यांशों का रचना-कौशल लिखिए : (6+6)

(क) सुधा-धार यह नीरस दिल की
मस्ती मगन तपस्वी की।
जीवन-ज्योति नष्ट नयनों की
सच्ची लगन मनस्वी की।।

बीते हुए बालपन की यह
क्रीड़ा पूर्ण वाटिका है।।
वही मचलना वही किलकना
हँसती हुई नाटिका है।। (वात्सल्य-वर्णन)

(ख) काट अन्ध-उर के बन्धन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे।
नव गति, नव लय, ताल-छन्द नव,
नवल कण्ठ, नव जलद-मन्द्र रव;
नव नभ के नव विहग-वृन्द को
नव पर, नव स्वर दे! (भाव-सौन्दर्य)

(ग) वसुधा पर ओस बने बिखरे
हिमकन आँसू जो क्षोभ भरे
उषा बटोरती अरुण गात!
अब जागो जीवन के प्रभात!

तम - नयनों की तारायें सब -
मुँद रही किरण दल में है अब,
चल रहा सुखद यह मलय वात!
अब जागो जीवन के प्रभात! (शिल्प - सौन्दर्य)

This question paper contains 4 printed pages.

Your Roll No. ....

Sl. No. of Ques. Paper	: **2981**
Unique Paper Code	: **12057503**
Name of Paper	: **अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य**
Name of Course	: **B.A. (Hons.) : CBCS : DSE–I**
Semester	: **V**
Duration	: **3 hours**
Maximum Marks	: **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

***सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।*

1. दलित विमर्श की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

अथवा

स्त्री विमर्श के सन्दर्भ में भारतीय और पाश्चात्य अवधारणाओं को स्पष्ट कीजिए। 15

2. किन्हीं तीन अंशों की व्याख्या कीजिए: 10×3=30

(क) 'यह खोह-कन्दरा या अंध-कूप नहीं, जिसका दूसरा छोर होता नहीं हो। सुरंग का दूसरा छोर होता ही है। चाहे वह कितनी भी टेढ़ी-मेढ़ी और लम्बी क्यों न हो। जैसे कोई रात कितनी भी डरावनी, अंधेरी और लम्बी लगने वाली हो, अंतत: उसका सवेरा तो होगा ही। कम से कम इस सुरंग में तुम्हें झाड़ झंखाड़ों, कांटे कंकड़ों, ठोकर लग सकने वाले

P. T. O.

पत्थरों और ऊबड़-खाबड़पन का तो अहसास नहीं हो रहा है। बस, आजू-बाजू की टक्करों को हिम्मत से बर्दाश्त करते रहे। जब चल ही दिए हो तो यह सुरंग कहीं न कहीं तो तुम्हें पहुँचायेगी ही।। और वही तुम्हारा गंतव्य व भवितव्य होगा। उस बिन्दु पर तुम्हें क्या करना है यह वक्त आने पर सोचना'— गोविंद गुरू के भीतर की चेतना ने उनके प्रश्नों की गुत्थी को सुलझाने का प्रयास किया।

अथवा

"मतलबपरस्त है, खुदगर्ज़ है, नाससमझ है, पढ़े-लिखे जाहिल हैं। औरत से हर शक्ल में सुख हासिल करना चाहते हैं, मगर बदले में देने वाला दिल नहीं रखते। पढ़ी-लिखी लड़कियों से डरते हैं। मैं तो कहता हूँ, कानून और औरतों की मदद इन दोगले मौलवियों और कनूनदां के जरिए नहीं होगी। औरत को खुद हदीस और कानून समझकर अपनी लड़ाई लड़नी पड़ेगी ... मेरे ऐसे खयालात हैं। इसलिए सरकार हो या आम आदमी, मुझसे कतराता है ... किसी सलाह-मशवरे के वक्त जाहिलों की फौज हर समाचार-पत्र में तस्वीर के संग छपी नजर आती है। नॉन-इशू को इशू बनाकर लोग लुत्फ लेते हैं।

(ख) तुम अपनी खातिर स्वतन्त्रता को समझ रहे हो अवश्य लाजिम।
मगर करोड़ों ही आदि हिन्दू गुलामी से क्या जड़े रहेंगे ?
जो चाहते हो कि शक्तिशाली हो एक दुनिया का देश भारत।
तो रोटी-बेटी से फिर 'हरिहर' कहो तो कब तक फिरे रहेंगे ?

अथवा

मन मेरे ! अब रेखा लांघो
आए तो आए
वह वन्य
छद्मधारी
अविचारी
काल खंडित कलंकित
ले जाए तो ले जाए मंदिर में ज्योतित
उजाले का प्राण करती
कंपित निर्धूम शिखा सी
यह अनिमेष लगन
कौन वहाँ आतुर है
किसे यहाँ देनी है
ऊँचा ललाट रखने को
अग्नि की परीक्षा वह

(ग) मतदान बंद होने के बाद मैं अपने पिता तथा माँ के साथ वापस घर आ रहा था, तो पिता जी ने मुझे बताया कि बाबा हरिहर दास ने उन्हें दो रुपया दिया, इसलिए उन्होंने 'रामराज' को वोट दे दिया। 'रामराज' का मतलब स्वामी करपात्री जी की 'रामराज्य परिषद' नामक पार्टी से था। यद्यपि मुझे राजनीति का कोई ज्ञान नहीं था किन्तु मेरा स्वाभाविक झुकाव कम्युनिस्ट पार्टी की तरफ था। विशेष तौर पर 'ललका झंडा मोटका डंडा' वाले अमिट प्रभाव के चलते, मुझे पिता जी के दो रुपए वाले प्रकरण से बहुत ग्लानि हुई, लेकिन उनसे कुछ कह नहीं पाया।

अथवा

एक बार मैं फिर सड़क के दूसरी ओर देखती हूँ। वहाँ खरीदारी का शोर है। सूरज खो गया शहर के उफनते फेनिल शोर-शराबे में और शाम— न्यूयॉर्क की शाम अभी तक पूरी तरह डूबी नहीं है। मैं स्तम्भित-सी अचानक सड़क पर नीले और लाल रंगों का छिड़काव देखने लगती हूँ। गोधूलि वेला और लाल बत्ती के जलते ही तेज रफ्तार से दौड़ती हुई गाड़ियों का रुकना और फिर थोड़ा दम लेकर अजाने निकलती हुई साँसों के साथ हवाओं का आँचल पकड़ क्षितिज की ओर दौड़ जाना, मुझे और अकेला कर जाता है। मेरे भीतर एक आदिम वेदना सिसक उठती है। आखिर इतना भी क्या गुस्सा कि यों बीच बाजार में मुझे अकेला छोड़ डॉक्टर साहब चले गए। मैं वापस होटल भी नहीं लौट सकती, सारे पैसे तो उनके पास जो थे।

3. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए:

(क) 'धूणी तपे तीर' आदिवासी शहादत की घटना पर केन्द्रित उपन्यास है। इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

(ख) मुर्दहिया और दलित चेतना

(ग) पितृसत्ता

(घ) 'कितनी व्यथा' की मूल संवेदना

(ङ) 'सलाम' कहानी में अभिव्यक्त समाज

(च) संथाल क्रांति **अथवा** पलामू विद्रोह। 10×3=30

This question paper contains 2 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 2983

Unique Paper Code : 12057505

Name of the Paper : भारतीय साहित्य की संक्षिप्त रूपरेखा

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi–CBCS–DSE-II

Semester : V

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भाषा, संस्कृति और साहित्य की परिभाषा देते हुए उसके अंत:संबंधों को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

भारत की भाषिक और सांस्कृतिक विविधता का अवलोकन कीजिए। 12

2. लौकिक संस्कृत साहित्य का स्वरूप बताते हुए उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

प्राचीन तमिल साहित्य का परिचय दीजिए। 12

P.T.O.

3. आधुनिकता पूर्व पंजाबी, मराठी पद्य साहित्य का विवेचन कीजिए।

अथवा

उड़िया साहित्य के योगदान पर लेख लिखिए। 12

4. भारतीय साहित्य पर स्वाधीनता आंदोलन के प्रभाव की चर्चा कीजिए।

अथवा

आधुनिक भारतीय साहित्य में नवजागरण एवं राष्ट्रीय आंदोलन की भूमिका का विवेचन कीजिए। 12

5. किन्हीं **तीन** विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 3×9=27

(*i*) भारतीय साहित्य का सामाजिक रूप

(*ii*) उर्दू साहित्य

(*iii*) असमिया पद्य साहित्य

(*iv*) प्राकृत साहित्य

(*v*) स्वातंत्र्योत्तर भारतीय साहित्य

(*vi*) अपभ्रंश साहित्य

(*vii*) भक्ति आंदोलन का महत्व।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 3148 **J**

Unique Paper Code : 12057505

Name of the Paper : **भारतीय साहित्य की संक्षिप्त रूपरेखा**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi–CBCS-DSE II**

Semester : V

Duration : 3 hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय साहित्य के सामासिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

भाषा, संस्कृति और साहित्य का अंत:संबंध स्पष्ट कीजिए।

2. वैदिक और लौकिक संस्कृत साहित्य के स्वरूप पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

पालि एवं प्राकृत साहित्य का परिचय देते हुए उसके योगदान की चर्चा कीजिए।

3. गुजराती साहित्य के योगदान पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

आधुनिकता-पूर्व हिंदी-इतर भारतीय साहित्य पर विचार कीजिए।

4. स्वाधीनता आन्दोलन का तत्कालीन हिंदी-साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा ? सविस्तार वर्णन कीजिए। (12)

अथवा

भारतीय साहित्य के प्रमुख आंदोलनों की चर्चा करते हुए उनके साहित्य पर प्रभाव की विवेचना कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए - (9×3=27)

(i) आधुनिकता पूर्व तमिल साहित्य

(ii) अपभ्रंश साहित्य

(iii) उर्दू साहित्य

(iv) नवजागरण

(v) मराठी साहित्य

(vi) भक्ति आंदोलन

(vii) बाँग्ला पद्य साहित्य

This question paper contains 3 printed pages.

Your Roll No. ....

Sl. No. of Ques. Paper	**: 2980**
Unique Paper Code	**: 12057502**
Name of Paper	**: हिन्दी भाषा का व्यावहारिक व्याकरण**
Name of Course	**: B.A. (Hons.) Hindi : CBCS : DSE – I**
Semester	**: V**
Duration	**: 3 hours**
Maximum Marks	**: 75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये ।)

***सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।*

1. भाषा की परिभाषा तथा उसकी विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

अथवा

व्याकरण का महत्व स्पष्ट करते हुए भाषा और व्याकरण के अंत:संबंध पर प्रकाश डालिए। 12

2. स्रोत के आधार पर शब्द के भेद उदाहरण सहित लिखिए।

अथवा

क्रिया की परिभाषा देते हुए उसके भेद उदाहरण सहित लिखिए। 12

3. शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए शब्द और पद में अंतर बताइए।

अथवा

संज्ञा (विकारी) की रूप-रचना स्पष्ट कीजिए। 12

4. अर्थ के आधार पर वाक्य के प्रकार बताइए।

अथवा

वाक्य संरचना के अंतर्गत 'अन्विति' के नियम लिखिए। 12

5. (क) किन्हीं **चार** शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए:

ग्यान, अहार, अग्नी, ऊषा, चेष्ठा, प्रसंशा, प्रकृती, विज्ञानिक 2

(ख) अधि, अनु उपसर्ग से बनने वाले दो-दो शब्द लिखिए। 2

(ग) किन्हीं **चार** शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए:

विद्यालय, संतोष, परमेश्वर, सत्याग्रह, प्रोत्साहन, विद्यालय, भाग्योदय, वसुधैव 2

(घ) किन्हीं **चार** शब्दों की समास योजना बताइए:

माता-पिता, युद्धभूमि, बलहीन, त्रिलोकी, पीताम्बर, नवरत्न, पराजय, यथाशीघ्र 2

(ङ) किन्हीं **चार** संज्ञाओं का रूप परिवर्तन करके भाववाचक संज्ञा बनाइए:

बूढ़ा, लड़का, मित्र, दास, पंडित, बालक, बुरा, एक 2

(च) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए:

(i) मेरे को स्कूल जाना है।

(ii) मुझे गरम गाय का दूध चाहिए।

(iii) मैंने अनेकों बार इसे देखा है।

(iv) दो लड़का खेल रहा है। 2

6. टिप्पणी लिखिए:

(क) व्यंजन के भेद

अथवा

प्रत्यय

(क) पदक्रम

अथवा

समास 8,7

This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **2979**

Unique Paper Code : **12057501**

Name of the Paper : **हिंदी की मौखिक और लोक साहित्य परंपरा**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi—CBCS/DSE-2**

Semester : **V**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 4×12=48

(क) लोक साहित्य का सामान्य परिचय देते हुए उसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

हिंदी की जनपदीय बोलियाँ कौन-कौनसी हैं ? विस्तार से बताइए।

(ख) किन्हीं **दो** प्रमुख संस्कार गीतों का विवेचन कीजिए।

अथवा

लोकगीतों की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ग) 'रामलीला' लोकनाट्य का विवेचन करते हुए उसकी विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

अथवा

'भिखारी ठाकुर' कृत 'बिदेसिया' के वैशिष्ट्य को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(घ) लखमीचंद कृत पद्मावत् का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

लोरिक के आधार पर लोकगाथा का वैशिष्ट्य रेखांकित कीजिए।

2. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 7+7=14

(क) छेड़ी खांछ भागी तेरी बाणि

खैई भरी अकेली पराणी

को बताल मेरी हई गेछ

एसी दाख घुघुति रूण झूण

ए नी बांस. घुघुति. ॥

अथवा

इंद्र कै बात सुनिकै भगवान का संतोषु भा औ तब उइ जमराज ते बोले-महराज्! यो तुम्हई गड़बड़घोटाला कीन हउ। अब तुम्हहीं येहका पव्यारौ। किरपा करिकै ई पापिन का फिर ते धरती माँ छाँड़ि आव; काहे ते, पाप गंगा के नहाए ते नहीं, अच्छे करमन ते खतम हात हैं। अब किरपा करिकै अइस भूल न कीन्हेंव।

(ख) करि के गइलन बलमुआँ निरासा!

गवना करा के सँइयाँ घरे छोड़ि दिहलन,

गइलन बिदेस हमें करि के बेकासा।

सँइयाँ के सुख हम कुछुओ ना जनलीं,

बिचहीं बिधाता बितवलन तमासा।

अथवा

कट्ठी होकै न्हाण चलैंगी दोघड़ धरल्यो सिर पै।

गीत गांवती चालैंगी सब लग्न लगाल्यो हर पै।

सिर चोटी कै लगा बोरला, साहर और डाण्डे बाली।

आंख्य मैं स्याही नाक में नथली जुल्फ नाग-सी काली

3. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 7+6=13

(क) बुझौवल (पहेलियाँ)

अथवा

आल्हा

(ख) नौटंकी

अथवा

सारंगा सदावृक्ष।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 2909 JC

Unique Paper Code : 12051502

Name of the Paper : Hindi Naatak / Ekanki (हिंदी नाटक/एकांकी)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi CBCS**

Semester : V

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (9×3=27)

(क) लरि बैदिक जैन डुबाई पुस्तक सारी ।
करि कलह बुलाई जवनसैन पुनि भारी ।।
तिन नासी बुद्धि बल विद्या धन बहु बारी ।
छाई अब आलस-कुमति-कलह अँधियारी ।।
भए अंध पंगु सब दीन-हीन बिलखाई ।
हा हा ! भारत दुर्दशा न देखी जाई ।।

P.T.O.

अथवा

संतोष ने भी बड़ा काम किया। राजा-प्रजा सबको अपना चेला बना लिया। अब हिंदुओं को खाने मात्र से काम, देश से कुछ काम नहीं। राज न रहा, पेनसन ही सही। रोजगार न रहा, सूद ही सही। वह भी नहीं, तो घर ही का सही, 'संतोष परम सुखं' रोटी ही को सराह-सराह के खाते हैं। उद्यम की ओर देखते ही नहीं। निरुद्यमता ने भी संतोष को बड़ी सहायता दी। इन दोनों को बहादुरी का मेडल जरूर मिले। व्यापार को इन्हीं ने मार गिराया।

(ख) प्रेम का नाम न लो। वह एक पीड़ा थी जो छूट गई। उसकी कसक भी धीरे-धीरे दूर हो जाएगी। राजा मैं तुम्हें प्यार नहीं करती। मैं तो दर्प से दीप्त तुम्हारी महत्वमयी पुरुष-मूर्ति की पुजारिन थी, जिसमें पृथ्वी पर अपने पैरों से खड़े रहने की दृढ़ता थी। इस स्वार्थ-मलिन कलुष से भरी मूर्ति से मेरा परिचय नहीं। अपने तेज की अग्नि में जो सब कुछ भस्म कर सकता हो, उसका दृढ़ता का आकाश के नक्षत्र कुछ बना-बिगाड़ नहीं सकते। तुम आशंका मात्र से दुर्बल-कंपित और भयभीत हो।

अथवा

राजनीति ? राजनीति ही मनुष्यों के लिए सब कुछ नहीं है। राजनीति के पीछे नीति से भी हाथ न धो बैठो, जिसका विश्व मानव के साथ व्यापक संबंध है। राजनीति की साधारण छलनाओं से सफलता प्राप्त करके क्षण-भर के लिए तुम अपने को चतुर

समझने की भूल कर सकते हो, परंतु इस भीषण संसार में एक प्रेम करने वाले हृदय को खो देना, सबसे बड़ी हानि है, शकराज ! दो प्यार करने वाले हृदयों के बीच में स्वर्गीय ज्योति का निवास है।

(ग) यह हमारा सौभाग्य है कि हमें गांधी जी की बकरी मिल गई। कुछ मिलना कुछ खोना भी होता है। हम जितना खोने को तैयार रहते हैं उससे पता चलता है कि हम कितना पाना चाहते हैं। इस बकरी ने हमेशा दिया है। आपको आजादी दी, एकता दी, प्रेम दिया। आज भी बहुत कुछ देने को मुंतजिर है। पर आप लेना भूल गए हैं। क्योंकि आप देना भूल गए हैं।

अथवा

बेटा, बड़प्पन बाहर की वस्तु नहीं- बड़प्पन तो मन का होना चाहिए। और फिर बेटा, घृणा को घृणा से नहीं मिटाया जा सकता। बहू तभी पृथक होना चाहेगी जब उसे घृणा के बदले घृणा दी जाएगी। लेकिन यदि उसे घृणा के बदले स्नेह मिले तो उसकी सारी घृणा धुंधली पड़कर लुप्त हो जाएगी। और महानता भी बेटा, किसी से मनवाई नहीं जा सकती, अपने व्यवहार से अनुभव कराई जा सकती है। ठूंठ वृक्ष आकाश को छूने पर भी अपनी महानता का सिक्का हमारे दिलों पर उस समय तक नहीं बैठा सकता, जब तक अपनी शाखाओं में वह ऐसे पत्ते नहीं लाता, जिनकी शीतल-सुखद छाया मन के सारे ताप को हर ले और जिसके फूलों की भीनी-भीनी सुगंध हमारे प्राणों में पुलक भर दे।

2. 'भारत-दुर्दशा' नाटक में चित्रित 'भारत दुर्दैव' और 'सत्यानाश फौजदार' की चारित्रिक विशेषताएँ को स्पष्ट करें। (12)

अथवा

'भारत दुर्दशा' नाटक की प्रासंगिकता का विवेचन कीजिए।

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में ध्रुवस्वामिनी और कोमा के माध्यम से स्त्री समस्याओं को उजागर किया गया है। इस कथन की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की मूल-संवेदना स्पष्ट करें।

4. 'बकरी' नाटक के 'युवक' की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। (12)

अथवा

'बकरी' नाटक में अभिव्यक्त व्यंग्य को स्पष्ट करते हुए इसके प्रतिपाद्य का विवेचन कीजिए।

5. 'स्ट्राइक' एकांकी मध्यवर्गीय समाज के पारिवारिक संबंधों में आए तनाव की अभिव्यक्त करती है- इस कथन की समीक्षा करें। (12)

अथवा

एकांकी के तत्वों के आधार पर 'दीपदान' की समीक्षा करें।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 2882 **JC**

Unique Paper Code : 12051501

Name of the Paper : Pashchatya Kavyashastra (पाश्चात्य काव्यशास्त्र)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. अरस्तू के अनुकरण सिद्धांत पर प्रकाश डालिए । (12)

अथवा

औदात्य की परिभाषा देते हुए उसके मूलभूत तत्वों का विवेचन कीजिए ।

2. कॉलरिज के कल्पना सिद्धांत का विश्लेषण कीजिए । (12)

अथवा

'कविता व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं व्यक्तित्व से पलायन है।' -- इस कथन के संदर्भ में इलियट के निर्वैयक्तिकता के सिद्धांत की समीक्षा कीजिए।

3. स्वछंदतावाद की प्रवृतियों पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

उत्तरसंरचनावाद का विश्लेषण कीजिए।

4. बिंब एवं प्रतीक की परिभाषा देते हुए काव्य में उनकी भूमिका स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

काव्य में फैंटेसी के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए: (9+9+9=27)

(i) विरेचन सिद्धांत

(ii) परंपरा और वैयक्तिक प्रज्ञा

(iii) कॉलरिज की काव्यभाषा विषयक मान्यता

(iv) संरचनावाद

(v) विसंगति और साहित्य

(vi) काव्य में विडंबना बोध

(3200)